अनुशासन और निष्ठा से तेरापंथ धर्मसंघ नितरंतर विकास के पथ पर अग्रसर होता रहेगा

आचार्यश्री महाप्रज्ञ

बीदासर, 24 अप्रैल।

हाजरी वाचन के अवसर पर तेरापंथ भवन के श्रीमद् मघवा समवसरण में धर्मसभा को संबोधित करते हुए पूज्यप्रवर ने मर्यादा पत्र दिखाते हुए फरमाया कि यह मर्यादा पत्र है और आचार्य भिक्षु और उत्तरवर्ती सभी आचार्यों ने इस पत्र का वाचन भी किया और संवर्धन भी किया है। मर्यादा का सम्यक पालन तभी हो सकता है जब हम धर्म के क्षेत्र में प्रवेश कर सकें। जब तक क्रोध, अहंकार पर विजय प्राप्त नहीं कर सकते, क्षमा करने की शक्ति नहीं है जब तक मुक्ति नहीं मिल सकती है।

आचार्यश्री ने फरमाया कि जब तक आसक्ति नहीं निर्लोप्ता नहीं है तो मर्यादा का समयक्त्व पालन नहीं हो सकता। जब मनुष्य में यह आसक्ति रहती है कि मैं अमुक पद का दोवदार बन जाऊं या किसी वस्तु के प्रति मोह होता है कि अमुक वस्तु मेरी है यह मोह की भावना होती है तो मनुष्य में सरलता नहीं हो सकती और मर्यादा का सम्यक पालन नहीं हो सकता। साधु में मर्यादा के प्रति निष्ठा बनी रहे। मर्यादा के प्रति निष्ठा तभी पैदा हो सकती है जब अहंकार विजय, माया विजय, लोभ विजय की साधना हो।

आचार्यप्रवर ने फरमाया कि यह हमारा सौभाग्य है कि अनुशासन और उसकी निष्ठा पैदा करने का काम निरंतर चलता रहा है और यह काम आगे से आगे चलता रहेगा तो तेरापंथ धर्मसंघ नितरंतर उत्तरोतर विकास करता चला जाएगा।

युवाचार्यप्रवर ने फरमाया कि एक साधु के लिए वांछनीय है कि वह कर्म निर्जरा के द्वारा अपनी आत्मा में परिष्कार करता रहे, परिष्कार का उपाय है कर्म निर्जरा और उसके लिए संवर की साधना आवश्यक है क्योंकि संवर के बिना परिष्कार होगा तो मलीनता आ जाएगी, संवर की साधना भी रहे और साथ में निर्जरा का योग हो तो पूर्णतया परिष्कार का प्रकल्प प्रस्फुटित हो सकता है। संवर की साधना को पुष्ट करने के लिए और निर्जरा की भावना को पुष्ट करने के लिए बार–बार अनुप्रेक्षा की जाए, चिंतन किया जाए तो संवर और निर्जरा की भावना को पुष्ट किया जा सकता है।

युवाचार्यश्री ने फरमाया कि चतुर्दशी के दिन सामान्यतया हाजरी होने का विधान है हाजरी का उद्देश्य है वह संवर और निर्जरा की भावना को पोषण मिल जाए और एक साधक को स्मरणा मिल जाए और कुछ मार्गदर्शन दिशा–निर्देश और प्रेरणा भी प्राप्त हो जाए।

इस अवसर पर आचार्यश्री के सान्निध्य में श्री माणकचन्द मोहनलाल मणोत परिवार के चार सदस्यों में श्री विनीत इक्कीस दिन, श्रीमती रसना अठाई, सुश्री स्वाति ग्यारह एवं श्री राजेश ने सात की तपस्या का प्रत्याख्यान किया। इस अवसर पर प्रवास व्यवस्था समिति के अध्यक्ष श्री बाबूलाल सेखानी, अणुव्रत समिति चुरू जिला के अध्यक्ष श्री चौथमल बोथरा एवं जैन श्वेताम्बर तेरापंथी महिला मण्डल की अध्यक्षा श्रीमती शांतिदेवी बांठिया ने अपने विचार व्यक्त करते हुए तपस्वियों को साहित्य भेंट कर सम्मानित किया।

तपस्या के उपलक्ष में साध्वीप्रमुखाश्री कनकप्रभाजी ने फरमाया कि इन गर्मी के दिनों में बिना भोजन किये रहना सहज बात नहीं है हर कोई व्यक्ति तपस्या नहीं कर सकता यह भी संभव नहीं है। जिनमें अनासक्ति का भावना, कर्मनिर्जरा की चेतना और आत्मशुद्धि का उद्देश्य होता है वही व्यक्ति इस दिशा की ओर प्रस्थान कर सकता है।

जैन श्वेताम्बर तेरापंथ महिला मण्डल द्वारा सम्मान समारोह का आयोजन आज

बीदासर, 24 अप्रैल।

स्थानीय जैन श्वेताम्बर तेरापंथ महिला मण्डल द्वारा शनिवार की रात्रि को आठ बजे कस्बे के थान–सुथान में साध्वीप्रमुखाश्री कनकप्रभाजी के पावन सान्निध्य में सम्मान समारोह का आयोजन किया जाएगा।

तेरापंथ महिला मण्डल की अध्यक्षा श्रीमती शांतिदेवी बांठिया ने जानकारी देते हुए बताया कि आचार्य महाप्रज्ञ के मर्यादा महोत्सव व्यवस्था में सक्रिय एवं सराहनीय कार्य करने वाले कार्यकर्त्ताओं को प्रशस्तिपत्र एवं प्रतीक चिन्ह देकर सम्मानित किया जाएगा।

शरीर प्रेक्षा संकल्प

सद्संस्कार की प्रयोगशाला जीवन विज्ञान

बीदासर, 24 अप्रैल।

जीवन विज्ञान संदर्भ प्रशिक्षणार्थी शिविर के चौथे दिन के प्रशिक्षण में प्रेक्षाप्राध्यापक मुनिश्री किशनलालजी ने तेरापंथ भवन में कहा सद् संस्कारों की प्रयोगशाला जीवन विज्ञान है। मृदु और मधुर बोलने वाला जीवन में सफल होता है। शरीर प्रेक्षा के प्रयोग से शरीर स्वस्थ और शक्तिशाली बनता है। संकल्प के प्रयोग से अजागृत मन चित्त का निर्माण को क्रियान्वयन करता है। अनुप्रेक्षा का विशिष्ट प्रयोग विद्यार्थियों को सदाचारी, सद्संस्कारी बनाता है जीवन विज्ञान की प्रक्रिया 16 राज्यों में चल रही हे। जिसमें कर्णाटक शिक्षा विभाग का प्रथम स्थान है जहां शिक्षा विभाग ने जीवन विज्ञान के नाम से पाठ्यक्रम बनाया और कक्षा 8वीं से 9वीं तक संचालित करने के कार्यक्रम हेतु प्रशिक्षणार्थी उपस्थित हुए हैं।

आचार्यप्रवर एवं युवाचार्य प्रवर ने कार्यक्रम को सरहाया और ऐसे उपक्रमों से ही समाज में जीवन विज्ञान का विकास हो सकता है। निर्देशक श्री सुन्दरलाल माथुर और उनकी निरंतर प्रशिक्षण में उपस्थिति रहती है। आचार्य महाप्रज्ञ व्यवस्था समिति के अध्यक्ष मंत्री और सभी का सहयोग निरंतर मिल रहा है।

बीदासर, 24 अप्रैल।

स्थानीय ओसवाल श्रीसंघ पंचायत भवन में गुरुवार की रात को युवाचार्यप्रवर के सान्निध्य में ओसवाल श्रीसंघ पंचायत के माधोभवन एवं भुमि के विकास के लिए आर्थिक सहयोग प्रदान करने वाले दानदाताओं, समाजसेवियों एवं अणुव्रत आन्दोलन में सक्रिय भागीदारी निभाने वाले लोगों का ओसवालश्रीसंघ पंचायत बीदासर एवं बीदासर अणुव्रत समिति की ओर से शॉल ओढाकर एवं प्रशस्तिपत्र देकर सम्मानित किया गया।

समारोह को संबोधित करते हुए युवाचार्य्रप्रवर ने फरमाया कि जिस परिवार व समाज में परस्पर प्रेमभाव एक दूसरे के प्रति विश्वास हित चिंतन होता है वह परिवार व समाज सुदृढ़, शक्तिशाली एवं विकसित होता है। जिस समाज में प्रशस्पर प्रेम व सद्भावना का अभाव होता है वह समाज बिखर जाता है। उन्होंने कहा कि जहां स्वार्थ भावना आ जाती है वहां संबंध टूट जाते हैं इसलिए हर परिवार व समाज में परस्पर में स्वार्थ भावना, शिष्टता एवं मैत्री का व्यवहार होना बहुत जरूरी है।

इस अवसर पर ओसवालश्रीसंघ पंचाय के सरपंच श्री चौथमल बोथरा, उपसरपंच श्री दानमल बांठिया, श्री राजकुमार बैंगानी, श्री जसकरण छाजेड़ ने दानदाताओं व समाजसेवियों को सम्मानित किया।

समारोह में श्री कन्हैयालाल बैंगानी, श्री राजकुमार सेठिया, श्री हनुमानमल सेखानी, श्री कन्हैयालाल नाहटा, श्री मोहनलाल मणोत, श्री गोपाल गुर्जर, श्री कन्हैयालाल शर्मा, श्री रूपचन्द दूगड़, श्री मोहनलाल नाहटा, श्री श्रीचंद बेगवानी, श्री सूरजमल दुगड़, श्री राजेश बैंगानी, श्री विमल कुमार डोसी सहित छत्तीस लोगों को सम्मानित किया गया।